दल नहीं व्यक्ति ही विकल्प है

संदीप भूतोड़िया

गुरुवार को चार राज्यों- पश्चिम बंगाल, असम, केरल, तमिलनाडु और एक केंद्र शासित प्रदेश पुंडिचेरी में सरकारों के गठन के लिए वोट पड़ेंगे। इन सभी जगहों पर विभिन्न राजनैतिक पार्टियों ने जिस तरह के चुनावी गठबंधन बनाए हैं। उससे लगता है कि एक पार्टी एक राज्य में जिससे गठबंधन किए है, दूसरे राज्य में उसी को अपना शत्रु नंबर एक मानती है। मतदाता दिग्भ्रमित है कि वह किसे वोट दे? भारतीय जनता पार्टी तहलका कांड से शर्म से डूबी है तो कांग्रेस का भी दामन कोई शुभ्र श्वेत नहीं है। मार्क्सवादी एक तरफ तो केरल और पश्चिम बंगाल में लड़ाई का मोर्चा कांग्रेस के खिलाफ खोले हैं तो दूसरी तरफ तमिलनाडु में वे उन जयललिता का समर्थन कर रहे हैं जिन्हें कांग्रेस का भी समर्थन है। ऐसे माहौल में एक सवाल यह खड़ा होता है कि वोट किस पार्टी को दिया जाए? जब कोई भी पार्टी न तो अपने सिद्धांतों पर डटी है और न ही उसके राजनेता अपने को पाकसाफ बता सकते हैं। साथ ही पिछले दिनों जिस तरह की राजनैतिक अस्थिरता पनपी है, उससे यह तो साफ हो गया है कि देश का कोई भी राजनैतिक दल चाहे वह राष्ट्रीय हो अथवा क्षेत्रीय, बहुमत का दावा नहीं कर सकता। लगभग हर राज्य में गठबंधन सरकारें ही चल रही हैं। पर सिद्धांतों को ताक पर रखकर कैसा गठबंधन?

पश्चिम बंगाल के एक विधायक ने तो यहां तक कहा था कि हम विधानसभा जाकर क्या करें, हमारी वहां कोई सुनता ही नहीं है। ये लोग भूल जाते हैं कि एक नहीं वरन् कई ऐसे सांसदों ने अपने दम-खम व तर्कों से संसद को हिलाया है। वर्तमान में भी कई व्यक्ति जिनकी पार्टी का बहुमत न के बराबर है सिर्फ अकेले अपने बूते पर पूरी पार्टी को खींचे जा रहे हैं। लोकतंत्र की इससे बड़ी मिसाल क्या हो सकती है कि एक पूर्व प्रधानमंत्री अपनी पार्टी से सिर्फ एकमात्र सांसद होकर भी आज भी प्रधानमंत्री पद की दौड़ में जब-तब शामिल रहते हैं। ऐसे में दलगत राजनीति से अलग हटकर व्यक्ति को चुनना आज के हालात में ज्यादा उपयुक्त होगा।

दलगत राजनीति से ऊपर उठकर व्यक्ति मूलक राजनीति की बात कहने के पीछे भी कई कारण हैं। वर्तमान राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में अगर आप नजर डालें तो यह प्रतीत होता है कि पूरे देश में किसी भी दल का अपना कोई ठोस सिद्धांत नहीं बचा है। नए दल अवसरवादी राजनीति कर उसी हिसाब से अपने तय सिद्धांत को अवसरवादिता का जामा पहनाते जा रहे हैं। कांग्रेस के इतने टुकड़े हो चुके हैं कि शायद कांग्रेस के संस्थापक भी सिद्धांतों के आधार पर यह नहीं बता सकते कि असली कांग्रेस कौन सी है। जो भारतीय जनता पार्टी कभी बांग्लादेशियों को घुसपैठिए करार देती थी वही आज उन्हें नागरिकता देने की बात कर रही है। मार्क्सवादी, मार्क्स को तो कब का ही भुला चुके हैं, अब इन चुनावों में तमिलनाडु में जयललिता को समर्थन दे रहे हैं जो कांग्रेस समर्थित हैं, जिसे पश्चिम बंगाल व केरल में वह अपना दुश्मन मानती है। अपने सिद्धांतों का दम भरने की दुहाई देने वाले कम्युनिस्टों के लिए शायद ये विधानसभा चुनाव सिर्फ सत्ता प्राप्ति का जरिया भर है। जिनके लिए वह अपने सिद्धांतों को लगातार बदलती गई है। भाजपा जो ईमानदारी व भ्रष्टाचार रहित सरकार का दावा करती थी, उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष को पूरे विश्व ने रिश्वत लेते हुए देखा है। कांग्रेस जिस ममता को अछूत मानती थी आज सोनिया गांधी उन्हीं को पश्चिम बंगाल में मुख्यमंत्री बनाने के लिए प्रचार करती नजर आती हैं। रही दलितों व किसानों की पार्टियों की बात तो इन दोनों वर्गों का प्रतिनिधित्व करने की बात तो अनगिनत राजनेता करते हैं और न जाने कितनी पार्टियां जबकि हकीकत यह है कि दलित वर्ग आज भी वहीं है जहां थे। जो सुधार व उन्नति राजनेता या राजनैतिक दल गिनाते हैं वह तो समय की देन है। कुछ उन्नति व सुधार तो वक्त के साथ ही अवश्यंभावी है।

एक साधारण मतदाता के सामने कई बार यह प्रश्न उठता है कि इससे तो अच्छा है कि वह मत न दे। एक राजनेता ने एक बार कहा था कि 'राजनीति में अच्छे लोगों को आना चाहिए। चूंकि अच्छे लोगों ने राजनीति में आना बंद कर दिया है इसीलिए बुरे व्यक्ति राजनीति में प्रवेश कर गए हैं क्योंकि स्थान हमेशा भरता है वह खाली नहीं रहता।' यही ठोस सच्चाई है और इसी को स्वीकार करते हुए अपना वोट जरूर देना चाहिए।

उस देश में स्वच्छ, ईमानदार व कर्मठ सरकार की कल्पना ही हमें नहीं करनी चाहिए जहां एक सरकारी अफसर सिर्फ कई हजार रुपए की रिश्वत में नाम आने के लिए इस्तीफा देता है, वहां दूसरी तरफ एक राजनेता कई करोड़ हजम करके भी ताल ठोक कर, सीना तान कर अपनी बीवी को मुख्यमंत्री नियुक्त कर सकता है जिस देश में आम आदमी को चोरी की रिपोर्ट लिखवाने में डर लगता है, वहीं चंदन तस्कर अपने अड्डे पर रोज अपने मनमाने व्यक्तियों की परेड करवाता है।

आप और हम कितना ही अपने को इस परिस्थिति से दरकिनार करने की कोशिश करें लेकिन हकीकत यही है कि इसके जिम्मेवार हम सब हैं।

पश्चिम बंगाल में इन विधानसभा चुनावों के ठीक पहले जिस तेजी व आश्चर्य के साथ समीकरण व गठबंधन बने-बिगड़े हैं, उन्हें मद्देनजर किया जाए तो पार्टी मूलक उम्मीदवारों का कोई मूल्य रह ही नहीं गया है। महानगर के हिंदी बहुल लोगों में तकरीबन हर उम्मीदवार की छवि उसकी पार्टी से ज्यादा मजबूत है।

ज्यादातर उम्मीदवार पूरा चुनाव ही अपने दमखम पर लड़ रहे हैं। पार्टी व चुनाव चिन्ह के नाम का सहारा लेकर। इस स्थिति में यह और भी जरूरी है कि मतदाता सोच समझकर व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व के आधार पर चुना जाए न कि उनके दल को ध्यान में रखकर। और यही स्थिति बेहतर होगी। मतदाता अगर दलगत राजनीति से ऊपर उठकर अपना प्रतिनिधि चुने तो शायद विधायिका जनकल्याण के ज्यादा काम कर पाएगी।

जनसत्ता, कोलकाता, १० मई २००१

'सबको शिक्षा' का अभिनव गैर सरकारी प्रयास शुरू

■ नगर संवाददाता

सीकर, 25 जुलाई । शेखावाटी के प्रवासी उद्योगपतियों ने गरीब तबके के जरूरतमंद बच्चों को शिक्षा के लिए स्कालरशिप प्रदान करने का एक अभिनव सेवा प्रकल्प शुरू किया है। दी जाने वाली सहायता में से 30 प्रतिशत शेखावाटी के बच्चों के लिए होगी। इस महत्त्वाकांक्षी योजना के सूत्रधार अंतरराष्ट्रीय मारवाड़ी युवा सम्मेलन के अध्यक्ष और एसबी समूह के प्रबंध निदेशक संदीप भूतोडिया ने आज स्थानीय क्रेजी वर्ल्ड में एक प्रेस वार्ता में इस योजना 'एज्युकेशन फार आल' की जानकारी दी। श्री भूतोड़िया ने बताया कि इस योजना के माध्यम से प्रयास किया जाएगा कि कम से कम शेखावाटी का कोई भी बच्चा आर्थिक कारणों से शिक्षा से वंचित न हो सके। योजना के लिए एक करोड़ रुपए की शुरुआती राशि से कोष स्थापित किया जा रहा है। प्रसिद्ध लेखिका और उद्योगपति डा. प्रभा खेतान ने 50 लाख रुपए देकर कोष का शुभारंभ किया है। शेष 50 लाख रुपए अन्य प्रवासियों के सौजन्य से एकत्र किए जा रहे हैं। श्री भूतोड़िया ने बताया कि 'एज्युकेशन फ़ार आल' की यह अवधारणा नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सैन के दर्शन से ग्रहण की गई है। इस योजना की खास बात यह है कि इसमें अन्य छात्रवृत्ति योजनाओं की तरह केवल अच्छे अंक प्राप्त मेधावी छात्रों को ही शामिल नहीं किया जाएगा बल्कि हर जरूरतमंद बच्चा इससे लाभान्वित हो सकेगा। योजना में राजस्थान के 600 बच्चे अभी से शामिल कर लिए गए हैं। इस योजना के तहत कुछ ऐसी स्कूलों को भी सहायता दी जा रही है जो खराब माली हालत से गुजर रही थी। चूरू की आजाद पब्लिक स्कूल सहित नौ स्कूलों को यह सहायता दी जा रही है। इनमें दो स्कूलें विकलांग बच्चों की भी है। झुंझुनूं जिले के एक बच्चे को कनाडा में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए भी आर्थिक सहायता दी गई है। पीएमटी में 15वां स्थान प्राप्त एक छात्र को छात्रावास सुविधा के लिए मदद दी गई। इस ट्रस्ट की एक सलाहकार समिति बनाई गई है जो जरूरतमंद बच्चों और उन्हें दी जाने वाली राशि का निर्धारण करती है। इस समिति में निर्वाचन आयोग के पूर्व अध्यक्ष टी.एन. शेषन, प्रसिद्ध लेखक खुशवंतसिंह और उद्योगपति रुसी मोदी जैसे जाने-माने नाम हैं। श्री भूतोड़िया ने बताया कि शेखावाटी के प्रवासीजन जनपद में विभिन्न सेवा कार्य हाथ में लेने के इच्छुक हैं। मारवाड़ी सम्मेलन की युवा इकाई इस दिशा में विशेष प्रयासरत है। एक डा. प्रभा खेतान पब्लिक वैलफेयर ट्रस्ट के जरिये भी यह उद्देश्य पूरा किया जा रहा है। यह ट्रस्ट महिलाओं व बच्चों को स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण देता रहा है। इसके लिए यह गांवों में महिलाओं को केन्द्र खोलने के लिए प्रेरित करता है। इन केन्द्रों का ट्रस्ट वित्तीय पोषण करता है। सुजानगढ़ में एक केन्द्र खोला जा चुका है। श्री भूतोड़िया ने राज्य सरकार के युवा मामलात के मंत्रालय की निष्क्रियता पर अफसोस जाहिर करते हुए कहा कि यदि सरकार रूची ले तो (शेष पृष्ठ 10 पर)

ब्योरा

- प्रवासी उद्योगपतियों ने गरीब तबके के बच्चों की शिक्षा का जिम्मा लिया
- जरूरतमंदों को छात्रवृत्ति मिलेगी, एक करोड़ के कोष से शुरुआत
- 30 प्रतिशत सहायता शेखावाटी के बच्चों को मिलेगी

सबको शिक्षा....

प्रवासियों के सेवा प्रकल्प और सुगमता से चलाए जा सकते हैं। श्री भूतोड़िया ने कहा कि शेखावाटी का जो कोई जरूरतमंद बच्चा 'एज्युकेशन फार आल' योजना से छात्रवृत्ति चाहे वह उनसे एसबी ग्रुप आफ कंपनीज, 1ए कामक कोर्ट 125 बी कामक स्ट्रीट, कोलकाता-700016 इंडिया पते पर अपनी पूरी जानकारी के साथ संपर्क कर सकता है।

शेखावाटी भास्कर, गुरूवार, 26 जुलाई 2001

प्रतिभा तराशने में शिक्षक की भूमिका अहम : सिंह

■ निजी प्रतिनिधि

सुजानगढ़, 10 अगस्त। महिला जागृति समिति, सुजानगढ़ के तत्त्वावधान में आयोजित प्रभा खेतान एज्युकेशनल अवार्ड समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए चूरू जिला पुलिस अधीक्षक मधुसूदनसिंह ने कहा कि प्रतिभाओं को तराशने में शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। मेधावी विद्यार्थी आनेवाले जीवनरूपी समर में कूदने वाले हैं, इन्हें भविष्य में विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए स्वयं को तराशना होगा। श्री सिंह ने उप्रा स्तर से कालेज स्तर तक के 34 प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को प्रभा खेतान एज्युकेशनल अवार्ड से नवाजा। समारोह में गर्ल्स कालेज की प्राचार्य श्रीमती संतोष व्यास ने कहा कि यह अवार्ड प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की मेहनत व परिश्रम का फल है जो शैक्षिक दृष्टि से आगे बढ़े हैं। प्रतिभाओं का सम्मान उनके भविष्य को सुखद, सुरक्षित, मंगलमय बनाने के लिए किया जाता है। अब इन्हें स्वयं अपने भीतर छिपी ऊर्जा से प्रेरणा प्राप्त कर समर्पित, लगनशील, राष्ट्रीयता से ओतप्रोत नागरिक बनना है जिनकी आज देश को आवश्यकता है। कार्यक्रम के प्रारंभ में मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि ने माल्यार्पण किया। आदर्श विद्या मंदिर के विद्यार्थियों द्वारा समवेत स्वरों में सरस्वती वंदना के बाद मुख्य अतिथि श्री सिंह को समिति की अध्यक्ष धनीदेवी लोढ़ा ने, विशिष्ट अतिथि रूक्मानंद शर्मा को भंवरीदेवी बागरेचा ने गुलदस्ता भेंट कर एवं प्राचार्य संतोष व्यास को प्रधानाचार्य श्रीमती सुदर्शना प्रजापत ने माला पहनाकर स्वागत किया।

समारोह का संचालन करते हुए श्रीमती सविता राठी ने प्रतिभाओं का परिचय दिया तथा बताया कि प्रभा खेतान ने 50 लाख रुपए शिक्षा के लिए समर्पित किए हैं। उन्होंने समारोह आयोजन के संबंध में साहित्यिक अलंकार, भावपूर्ण भाषा शैली में वर्णन करते हुए प्रभावी प्रकाश डाला। पूर्व प्राचार्य ओसवाल विद्यालय रूक्मानंद शर्मा विशिष्ट अतिथि ने कहा कि समिति ने गरिमाय, गौरवपूर्ण कार्यक्रम आयोजित कर प्रतिभाओं का सम्मान किया जिससे आनंद की अनुभूति हुई है। श्री शर्मा ने कहा कि मेरा अनुभव है कि जीवन में नियमितता, समय की पाबंदी, अनुशासन का पालन किया जाए तो लक्ष्य, मंजिल प्राप्त की जा सकती है। सुषमा मूंधड़ा ने अभिनंदन-पत्र का वाचन किया एवं सदस्याओं द्वारा आगंतुक मेहमानों को भेंट किया गया। श्रीमती सुमन ने क्लब की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

अवार्ड प्राप्त करने वालों में आदर्श विद्यामंदिर के दीपक अग्रवाल, प्रिया सर्राफ, सुमन चौधरी, हेमंत बेनीवाल, कंदोई बालिका विद्यालय की स्वाति, पिंकी बगड़िया, मीना शर्मा, प्रतिभा बैद, ममता शर्मा, गांधी बालिका विद्यालय की शिप्रा सोनी, नीतू शर्मा, सोनम शर्मा, ज्योति सोनी, सरिता छरंग, ओसवाल विद्यालय के दीपक भाटी, प्रियंक फतेहपुरिया, आदित्य विक्रम फतेहपुरिया, पीसीबी के नेहा काला, एकता चौधरी, गोपाल अरोड़ा, कुलदीप जाखड़, जाजोदिया स्कूल के विकास सैनी, नरेश मंगलहारा तथा उच्च शिक्षा में बजरंगलाल शर्मा, निधि जांगिड़, सीए में प्रेमा सारड़ा, पीएमटी में चयनित हरदेवाराम नेहरा, पुरुषोत्तम करवा, रविकांत सोनी, तपेंद्र विश्नोई, शिवरतन मोदी, पवन शर्मा व मेघा चितलांगिया थे।

- झुंझुनूं। स्थानीय बगड़ रोड स्थित गोगा मेड़ी में वीर गोगाजी की मूर्ति का अनावरण जन्माष्टमी के अवसर पर रविवार को शाम पांच बजे किया जाएगा।

शेखावाटी भास्कर, ११ अगस्त २००१

सुजानगढ़। प्रभा खेतान एज्युकेशन अवार्ड समारोह में पुलिस अधीक्षक मधुसूदनसिंह ओसवाल विद्यालय की 11वीं कक्षा की छात्रा प्रियंका फतेहपुरिया को पुरस्कृत करते हुए। पास खड़ी हैं महिला जागृति समिति अध्यक्ष धनीदेवी लोढ़ा। दूसरे चित्र में महिला जागृति समिति की सदस्याएं पीएमटी में चयनित मेधावी छात्रों के साथ। भास्कर

शेखावाटी भास्कर, १२ अगस्त २००१

जनसत्ता, कोलकाता, २३ अगस्त २००१ ३

विकास के लिए राजस्थानियों का नेशनल फोरम बना

कोलकाता, २२ अगस्त (जनसत्ता)। राजस्थान के विकास कार्यों में सकारात्मक सहयोग करने और निवासी व प्रवासी राजस्थानियों के बीच संपर्क सूत्र बनाने के मकसद से जयपुर में राजस्थान नेशनल फोरम बनाई गई है। इसका अध्यक्ष कोलकाता के समाजसेवी एवं विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक संस्थाओं से जुड़े संदीप भूतोड़िया को बनाया गया है। २८ लोगों की एक कार्यकारिणी भी बनाई गई है जिसमें अपने-अपने क्षेत्रों में प्रतिष्ठित विशिष्ट राजस्थानियों को लिया गया है।

राजस्थान नेशनल फोरम राजस्थान के औद्योगिक विकास के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्य करेगी। यहां बुधवार को जारी एक बयान में बताया गया है कि फोरम राजस्थान की प्रगति और समस्याओं के बारे में राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सेमिनार तथा सम्मेलन आयोजित करेगी। राज्य के विकास के लिए निजी क्षेत्रों के योगदान के बाबत फोरम प्रयास करेगी। बीते वर्ष जयपुर में हुए अंतरराष्ट्रीय राजस्थानी सम्मेलन के बाद से ही इस तरह का संगठन बनाने की कोशिश सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं की तरफ से की जा रही थी। ताकि राज्य में प्रवासी राजस्थानियों की उद्यमशीलता का लाभ लिया जा सके।

राजस्थान नेशनल फोरम की एक उच्चस्तरीय सलाहकार समिति बनाई गई है। इसके आमंत्रित सदस्य हैं, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत, सुप्रसिद्ध कथाकार कमलेश्वर, पत्रकार वीर सक्सेना, कांग्रेसी नेता नटवर सिंह, ब्रिटेन में भारत के पूर्व उच्चायुक्त तथा मशहूर विधिवेत्ता लक्ष्मीमल सिंघवी एवं सुप्रसिद्ध उपन्यासकार और उद्योगपति प्रभा खेतान। इसके साथ ही एक अंतरराष्ट्रीय सलाहकार समिति बनाई गई है। इसमें विदेशों में रह रहे महत्वपूर्ण राजस्थानियों को शामिल किया जाएगा।

जनसत्ता, कोलकाता, २३ अगस्त, २००१

संदीप भूतोड़िया राजस्थान नेशनल फोरम के अध्यक्ष

कोलकाता, २२ अगस्त। कोलकाता के सुपरिचित युवा समाजसेवी एवं विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक संस्थाओं से जुड़े संदीप भूतोड़िया को राजस्थान नेशनल फोरम का अध्यक्ष मनोनित किया गया है। गत वर्ष २००० में जयपुर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय राजस्थानी सम्मेलन के बाद से ही इस तरह के संगठन बनाने की कोशिश सरकारी एवं गैर सरकारी व्यक्तियों एवं संस्थाओं द्वारा किया जा रहा था। राजस्थान नेशनल फोरम का गठन जयपुर में किया गया है तथा संस्था का मुख्य उद्देश्य राजस्थान के विकास हेतु कार्य व देश में रह रहे राजस्थानियों के संपर्क सूत्र कायम करना है। फोरम के महासचिव भरतपुर के प्रदीप चतुर्वेदी हैं। संपूर्ण राजस्थान से २८ व्यक्तियों की एक कार्यकारिणी समिति बनाई गयी है, जिसमें राजस्थान के प्रवासी एवं राजस्थान के निवासी दोनों को सम्मिलित किया गया है। कार्यकारिणी समिति में व्यावसायी, सरकारी अफसर, चिकित्सक, तकनीकी सलाहकार, पत्रकार एवं बुद्धिजीवियों इत्यादि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तियों को सम्मिलित किया गया है। राजस्थान नेशनल फोरम राजस्थान में पर्यटन केविकास की दृष्टि एवं राज्य के औद्योगिक विकास हेतु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करेगी। जयपुर से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में यह बतलाया गया है कि फोरम, राजस्थान की प्रगति और समस्याओं के बारे में राष्ट्र एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सेमिनार व सम्मेलन का आयोजन करेगी व क्षेत्र के विकास के लिए निजी क्षेत्रों के योगदान के लिए प्रयत्न करेगी। राज्य के लिये प्रवासियों से बेहतर साहित्यिक, सांस्कृतिक संबंध हेतु सेतु निर्माण फोरम के उद्देश्यों में शामिल है। राजस्थान नेशनल फोरम की एक उच्चस्तरीय सलाहकार समिति बनाई गयी है,जिसके आमंत्रित सदस्य हैं, राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमंत्री श्री भैरो सिंह शेखावत, सुप्रसिद्ध कहानीकार श्री कमलेश्वर, सुप्रसिद्ध पत्रकार डा. वीर सक्सेना, राजनीतिज्ञ श्री नटवर सिंह, ब्रिटेन में भारत के पूर्व उच्चायुक्त श्री लक्ष्मीमल सिंघवी एवं कोलकाता के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार एवं उद्योगपति सुश्री प्रभा खेतान। रोष्ट्रीय सलाहकार समिति के अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार समिति का भी गठन किया गया है। जिसमें विदेशों में रह रहे महत्वपूर्ण राजस्थानियों को सम्मिलित किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि जयपुर में गत वर्ष २००० में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय राजस्थानी सम्मेलन में श्री संदीप भूतोड़िया सबसे कम उम्र के व्यक्ति थे। वे संस्था की अध्यक्षता का भार नवम्बर में जोधपुर में आयोजित एक सार्वजनिक कार्यक्रम में संभालेंगे।

दैनिक विश्वमित्र, कोलकाता, २३ अगस्त, २००१

संयुक्त राष्ट्र की डरबन कार्यशाला के लिए संदीप भूतोड़िया आमंत्रित

कोलकाता, १८ अगस्त (जनसत्ता)। दुनिया भर में फैली संयुक्त राष्ट्र की संस्थाओं का महासंघ २६ अगस्त से तीन सितंबर तक दक्षिण अफ्रीका के डरबन शहर में एक कार्यशाला का आयोजन कर रहा है। इसमें संपूर्ण विश्व के विभिन्न देशों की तमाम गैर सरकारी संस्थाओं के युवा पदाधिकारी और समाज सेवा से जुड़े विशिष्ट युवकों को आमंत्रित किया गया है। कोलकाता से युवा समाज सेवी संदीप भूतोड़िया इसमें हिस्सा लेंगे। इस कार्यशाला में यह सिखलाया जाएगा कि किस तरह से गैर सरकारी संस्थाएं बेहतर तरीके से संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों को मूर्त रूप दे सकती हैं। संयुक्त राष्ट्र के लक्ष्यों, उद्देश्यों व कार्यक्रमों को प्राप्त करने के लिए किस तरह से गैर सरकारी संस्थाओं को मदद की जा सके व युवा वर्गों को संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों से जोड़ा जा सके, यही कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य है।

संदीप भूतोड़िया इस सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र संघ की भारत शाखा की तरफ से इसमें हिस्सा लेंगे। एक सप्ताह तक चलने वाली इस कार्यशाला में युवाओं को उनके व्यक्तित्व के विविध रूपों की उन्नति के लिए कई तरह के प्रशिक्षण दिए जाएंगे। इस कार्यशाला का आयोजन संयुक्त राष्ट्र संस्थाओं के न्यूयार्क स्थित मुख्यालय द्वारा किया गया है।

जनसत्ता, कोलकाता, १९ अगस्त, २००१

आज जो 'बिहारी सम्मान से सम्मानित हो रहे हैं:

डा. प्रभा खेतान और बशीर अहम्

राजस्थान के प्रसिद्ध साहित्यकार, कवि बशीर अहमद मयूख और उपन्यासकार डा. प्रभा खेतान को के.के. बिड़ला फाउंडेशन का प्रतिष्ठित बिहारी पुरस्कार समारोहपूर्वक सोमवार, तीन सितम्बर को जयपुर में प्रदान किया जा रहा है। यह पुरस्कार प्रसिद्ध विधिवेत्ता, सांसद लक्ष्मीमल्ल सिंघवी प्रदान करेंगे।

श्री मयूख को वर्ष 2000 का पुरस्कार उनकी पुस्तक अवधू अनहद नाद सुने पर और डा. प्रभा खेतान को वर्ष 1999 का पुरस्कार उनके उपन्यास पीली आंधी के लिये दिया जाएगा।

डा. प्रभा खेतान और पीली आंधी

1 नवम्बर, सन् 1942 को जन्मी राजस्थान की मूल निवासी डा. प्रभा खेतान की शिक्षा दीक्षा कोलकाता में हुई। विश्वविद्यालय में उनका विषय दर्शन शास्त्र था, जिसमें उन्होंने ज्याँ पॉल सार्त्र के अस्तित्ववाद पर शोध कर पी.एच.डी. की उपाधि अर्जित की। डा. प्रभा खेतान का व्यक्तित्व बहुआयामी है। साहित्यकार तो वे है ही। अनूदित और संपादित ग्रंथों के अतिरिक्त उनके 6 कविता संग्रह, 6 उपन्यास और 2 उपन्यासिकाएं प्रकाशित हो चुके हैं। 1996 में प्रकाशित पीली आंधी के बाद उनका एक और उपन्यास स्त्री पक्ष भी प्रकाशित हुआ है। साहित्य के अतिरिक्त चिंतन पर भी उनकी 3 पुस्तकें, दो सार्त्र पर और एक अल्बेयर कामू पर प्रकाशित हुई है। वे कोलकाता चैम्बर आफ कॉमर्स की प्रथम महिला अध्यक्षा भी रही है। साहित्य-सृजन और अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय के अतिरिक्त सामाजिक कार्यों में भी प्रभा जी की बहुत रूचि है। वे कई सांस्कृतिक और सामाजिक संस्थानों में कार्यरत है। नारी विषयक समस्याओं पर वे विशेष रूप से सक्रिय है। इन विभिन्न क्षेत्रों में उन्हें अनोक सम्मानों और पुरस्कारों से अलंकृत किया गया हैं।

अकाल और सूखे की मार से अपनी ... से उखड़े मारवाड़ियों ने किस प्रकार अप... के सुदूर पूर्वी अंचल में किस प्रकार पूरी समृद्धि से स्थापित किया इसी की नियति कथा इस उपन्यास का कलेवर है। अपने घर से बहुत दूर कोलकाता में स्थापित होने की यह कथा केवल किशनचन्द्र रूंगटा की ही कहानी नहीं है, इस प्रकार के अनेकों संघर्षरत लोगों के उत्कर्ष की कथा है जो उन्नीसवीं सदी के उत्तरा... और बीसवीं सदी के आरंभ में अपनी अनजानी कठिन यात्रा पर निकल पड़े थे। अपनी जमीन का ... दर्द इस उपन्यास का मर्म कहा जा सकता है।

श्री बशीर अहमद मयूख और अवधू अनहद नाद सुने

श्री बशीर अहमद मयूख राजस्थान के अग्रणी कवि है। उनका जन्म 16 अक्टूबर 1926 को कोटा जिले में हुआ। अपने विद्यार्थी काल से ही वे राजनीति में सक्रिय हो गए। उन्होंने 1942 के स्व...ता आंदोलन में भाग लिया और उसके बाद व...ों तक सक्रिय राजनीति में रहे। 1972 में वे ...गत राजनीति से अलग हो गए। उनकी सा...त्य में सक्रियता भी सन् 1942 से ही आरंभ हुई। तब से अब तक उनकी कविताएं निरंतर प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही है। उनके अब तक 5 कविता संग्रह और एक सांस्कृतिक ...बंध संग्रह प्रकाशित हुए हैं। काव्य कृतियों में स्वर्ण रेख (जो ऋग्वेद की रिचाओं और मंत्रों का काव्य रूप है) और ज्योति पथ (जो वेद, कुरान, गीता, उपनिषद, जैन-बौद्ध आगम सूत, गुरू ग्रंथ साहब आदि का रूपान्तर) है विशेष चर्चित रहें। उनके सूर्यबीज (गीत संग्रह) का साहित्यिक क्षेत्रों में अच्छा स्वागत हुआ है।

जलतेदीप, जयपुर 3 सितंबर 2001

BIHARI, VACHASPATI AWARDS

An ode to Goddess Saraswati

First to Fly A380

What happens when eloquence is matched with powerful play of words? It is a sheer triumph of one of the most powerful medium of communication — language.

HINDUSTAN TIMES

Noted jurist L M Singhvi (centre) giving away the Bihari Award for the year 2000 to Poet Bashir Ahmed Mayukh (extreme right) Patron of the Awards Foundation, K K Birla (extreme left) looks on. Prof N S Ramanujtatacharya (below left), who received the Vachaspati Award for 2000

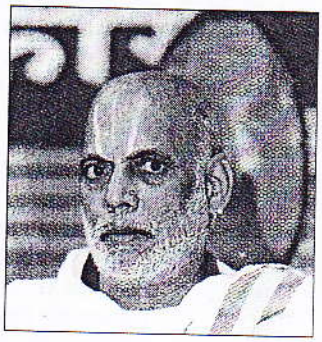

THAT CAPTURES for a spilt second in its history the heights of the inherent qualities of words that make up a language. Or how do we describe the felicitation programme of the four well-known luminaries of the literary world here at Pink City Press Club on Monday. There we had Bashir Ahmed Mayukh, Prof Rasik Bihari Joshi, Prof NS Ramanujtatachraya and Dr Prabha Khaitan who were the proud recipients of the Bihari and Vachstapith Awards.

Under the aegis of the KK Birla Foundation, which has since its inception virtually revered the rich heritage of India and its treasured literature, Bihari Puraskar and Vachaspati Puraskar ceremony was an extension of what KK Birla Foundation stands for. Just a few of his thoughts: "It is my sincere wish that all the literary giants would keep producing works of literature." He lamented, "I have lost when it comes to attaining a constitutional status for the Rajasthani language". He hoped, "That the language would reach a stage where general discussions can be made in Rajasthani." He recounted, " I have fought successive governments for the same." And I will continue to do so relentlessly in future, the son of the soil in his unassuming way added. To this the hall resounded with thunderous applause. The Jaipurites rightfully acknowledged this entrepreneur giant.

Adding lustre to the already charged atmosphere of the literary gathering were the recipients of the awards themselves. Dr Prabha Khaitan was not present as she was abroad. Her son collected the award on her behalf. The audience got a mouthful of the sky when they got what they had come for. Just a few lines of the dexterous play of words unfolding into delightful poetry, couplets and prose. Taste this: *Hum Bhejte rahe hain Pranam. Sinhasan chod jungle mein jaane waalon ke naam, ve Buddh hon ya maryada purushottam* Ram. Not to mention the smooth and effortless lisping of Sanskrit language with all its grace by Prof Rasik Bihari Joshi and Prof NS Ramanujtataachrya. As rightly remarked by one of the dignitaries present that it has to be the blessing of Goddess Saraswati that they have produced such marvels of literature in Sanskrit.

Add to that the forceful oratory of the renowned lawyer and Rajya Sabha member, Dr Lakshmimal Singhvi who concluded the evening's ceremony with his concern for Sanskrit. Praising the Birla family for adhering to the *sanskriti* of the Sanskrit and Rajasthani languages, he maintained that the powerful presence of imagery and symbolism in both languages is important in maintaining them.

Singhvi elaborated that the culture of Indian languages could not be maintained through political haranguing by the so-called watchdogs of Indian culture, but by delving into the realm of their rich heritage. The words were met with applause.

As if on cue, the glow of the *diya* stationed before the portrait of Goddess Saraswati brightened.

HINDUSTAN TIMES, JAIPUR, TUESDAY, 3 SEPTEMBER 2001

प्रेस क्लब सभागार में सोमवार को आयोजित बिहारी और वाचस्पति पुरस्कार समारोह में बशीर अहमद मयुख, प्रो. रसिक बिहारी जोशी, कृष्ण कुमार बिड़ला, डा. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, डा. एन.एस. रामानुजाताताचार्य व प्रो. वाचस्पति उपाध्याय (बाएं से दाएं)।

राजनीति समाज और व्यक्ति को तोड़ती है : डा. सिंघवी

■ नगर संवाददाता

जयपुर, 3 सितंबर। ब्रिटेन में भारत के पूर्व उच्चायुक्त और सांसद लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने राजनीति और राजनीतिज्ञों पर कटाक्ष करते हुए कहा है कि राजनीति समाज और व्यक्ति को तोड़ने का काम करती है, जबकि संस्कृति दोनों को जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने कहा कि संस्कृति को स्थान नहीं मिलने से आज संसदीय शिष्टाचार ही खो गया है।

सिंघवी आज यहां पिंकसिटी प्रेस क्लब में के.के. बिड़ला फाउंडेशन की ओर से वर्ष 1999 तथा 2000 के बिहारी और वाचस्पति पुरस्कार दिए जाने के लिए आयोजित समारोह को अध्यक्ष के रुप में संबोधित कर रहे थे। वर्ष 1999 का बिहारी पुरस्कार डा. प्रभा खेतान को उनके उपन्यास 'पीली आंधी' और वाचस्पति पुरस्कार प्रोफेसर रसिक बिहारी जोशी को उनके काव्य ग्रंथ 'श्री राधापंचशती' पर दिया गया। इसी तरह वर्ष 2000 का बिहारी पुरस्कार बशीर अहमद मयूख को उनके कविता संग्रह 'अवधू अनहद नाद सुने' और वाचस्पति पुरस्कार प्रोफेसर एन.एस. रामानुजाताताचार्य को उनके काव्य 'प्रत्यक्षतत्त्वचिंतामणि विमर्श' पर दिया गया है। डा. सिंघवी ने साहित्य को संस्कृति का शील बताते हुए कहा कि इस शील से समाज का मार्ग आलौकित होता है।

सम्मान

- **बिहारी और वाचस्पति पुरस्कार समारोह संपन्न**
- **जीवंत और सृजन की भाषा है राजस्थानी : के.के. बिड़ला**

कवि की क्षमता और कविता का प्रभाव लोगों का मन बदलने में सक्षम है। इससे पूर्व फाउंडेशन के अध्यक्ष कृष्णकुमार बिड़ला ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि दोनों पुरस्कारों के निर्णय की प्रक्रिया एक-सी होने के बावजूद उनकी निर्णायक समितियां अलग-अलग हैं। बिड़ला ने राजस्थानी को जीवंत और सृजन की भाषा बताते हुए कहा कि इसे जो स्थान मिलना चाहिए, वह नहीं मिल पाया है।

उन्होंने बिहारी पुरस्कार के लिए राजस्थानी भाषा, संस्कृति, साहित्य और इतिहास को भी शामिल किए जाने पर विचार का आश्वासन दिया। इस अवसर पर सम्मानित होने वाले विद्वानों को शाल, प्रशस्ति-पत्र, फाउंडेशन का प्रतीक चिह्न, श्रीफल और नकद राशि दी गई। सम्मानित होने वालों में प्रभा खेतान विदेश में होने के कारण समारोह में उपस्थित नहीं थीं। इस अवसर पर प्रोफेसर रसिक बिहारी, बशीर अहमद मयूख और रामानुजाताताचार्य ने भी अपने विचार प्रकट किए। वरिष्ठ पत्रकार भंवर सुराणा ने मंच संचालन किया। समारोह में कई राजनीतिज्ञ, साहित्यकार और विद्वान मौजूद थे।

दैनिक भास्कर, जयपुर, मंगलवार, 4 सितंबर 2001

के.के. बिड़ला फाउंडेशन के बिहारी एवं वाचस्पति पुरस्कार समारोह के अवसर पर बाएं से खड़े हैं साहित्यकार बशीर अहमद मयूख, डा. रसिक बिहारी जोशी, उद्योगपति कृष्ण कुमार बिड़ला, विधिवेत्ता डा. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, साहित्यकार एन.एस. रामानुजताताचार्य, डा. वाचस्पति उपाध्याय एवं संदीप भूतोड़िया जिन्होंने डा. प्रभा खेतान की जगह पर पुरस्कार लिया। पत्रिका फोटो

साहित्य में समाज को जोड़ने की शक्ति -सिंघवी

प्रभा खेतान व बशीर अहमद को बिहारी पुरस्कार

[कार्यालय संवाददाता]

जयपुर, 3 सितम्बर। साहित्यकार प्रभा खेतान को 'पीली आंधी' और कवि बशीर अहमद 'मयूख' को 'अवधू अनहद नाद सुने' के लिए सोमवार को बिहारी पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर ही संस्कृत भाषा का वाचस्पति पुरस्कार डा. रसिक बिहारी जोशी को 'श्री राधा पंचशति' के लिए और प्रोफेसर एन.एस. रामानुजताताचार्य को 'प्रत्यक्ष तत्व चिन्तामणि विमर्श' के लिए दिया गया। के.के. बिड़ला फाउंडेशन की ओर से ये पुरस्कार उन्हें विधिवेत्ता लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने प्रदान किए। प्रेस क्लब में आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्षीय भाषण में सिंघवी ने कहा कि भाषा, साहित्य और संस्कृति के माध्यम से ही समाज को जोड़ा जा सकता है। उन्होंने कहा कि राजनीति में यह क्षमता नहीं रही। वर्तमान में राजनीति प्रश्नाकुल है। वह 'समाधान सम्पन्न' की भूमिका खो चुकी है। सिंघवी ने कहा कि साहित्य और संस्कृति में एक शील है। इसमें जीवन जीने की एक कला है। सिंघवी ने पुराने दिनों को याद करके कहा कि आज संसदीय शिष्टाचार और सौहार्द खो गया है। यह हालत इसीलिए बनी कि हमने संस्कृति को उचित स्थान नहीं दिया।

विधिवेत्ता ने कहा कि लक्ष्मी तभी सार्थक होती है जब वह समाज, साहित्य और संस्कृति को पोषित करती है। उन्होंने राजस्थानी भाषा को सृजन की भाषा बताते हुए इसे गौरव देने की बात कही।

उद्योगपति कृष्ण कुमार बिड़ला ने भी राजस्थानी भाषा को गौरव दिलाने की बात कहते हुए इसे संविधान में दर्जा दिलाने की मांग की। उन्होंने कहा कि बिहारी पुरस्कार का दायरा और बढ़ाकर इसे राजस्थानी भाषा में भी देने पर विचार किया जा रहा है।

पूर्व में हिन्दी किताबों का परिचय देते हुए डा. सूर्यप्रकाश दीक्षित ने बताया कि डा. प्रभा खेतान को उनके उपन्यास 'पीली आंधी' के लिए 1999 का बिहारी पुरस्कार दिया गया है। यह उपन्यास एक राजस्थानी परिवार की कथा है। अकाल और सूखे की मार से अपनी धरती से उखड़े मारवाड़ियों ने देश के सुदूर पूर्वी अंचल में किस तरह खुद को स्थापित किया। यह इस उपन्यास का कलेवर है। बशीर अहमद मयूख के 'अवधू अनहद नाद सुने' में भारतीय आध्यात्मिक मनोभूमि के आधार को रेखांकित किया गया है। इसमें 'शब्द' ब्रह्म चेतना का दर्शन कराता है।

डा. वाचस्पति उपाध्याय ने संस्कृत मनीषियों के ग्रन्थों का परिचय कराते हुए बताया कि डा. रसिक बिहारी जोशी की 'श्री राधा पंचशती' वैष्णव परम्परा की रसमय रचना है।

यह भक्ति से परिपूर्ण है। इसमें वैष्णव अद्वैत परम्परा को स्थापित करते हुए राधा को कृष्ण से अलग न मानकर उसकी एक शक्ति मानी गई है। इसी तरह तातार्च के 'प्रत्यक्ष तत्व चिन्तामणि विमर्श' ग्रन्थ नाट्य न्याय के 15 विषयों का तुलनात्मक दृष्टि से विवेचन किया गया है। कार्यक्रम का संचालन पत्रकार डा. भंवर सुराणा ने किया।

राजस्थान पत्रिका, जयपुर 4 सितंबर 2001

अच्छे संस्कार भी जरूरी हैं जीवन में : संदीप भूतोड़िया

युवा वर्ग के कंधों पर ही समाज का भविष्य टिका हुआ है. किसी भी राष्ट्र या समाज की प्रगति में प्रमुख किरदार निभाता है, युवा वर्ग. वो शक्ति सामर्थ्य का का प्रबल पुंज है. वह चाहे तो बहुत कुछ कर सकता है. एक ऐसे ही उद्यमी पुरुषार्थी युवक हैं, सामाजिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में समान रूप से सक्रिय योगदान देते आ रहे हैं, संदीप भूतोड़िया. इस युवक ने अपने दृढ़ निश्चय, व्यवहार- कुशलता और सूझबूझ से ना सिर्फ सामाजिक क्षेत्र में अपनी पहचान बनायी है, वरन् व्यावसायिक क्षेत्र के अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी कंपनी को शीर्ष स्थान पर पहुंचाने के लिए भी वे बराबर प्रयासरत हैं.

1973 में राजस्थान के चुरू जिले में सुजानगढ़ के एक प्रतिष्ठित परिवार में जन्मे श्री भूतोड़िया ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा दिल्ली, सुजानगढ़ तथा कोलकाता के श्री जैन विद्यालय से ग्रहण की. भवानीपुर कालेज से उन्होंने बीकाम की परीक्षा (आनर्स) में उत्तीर्ण की. बचपन से ही अति महत्वाकांक्षी रहे श्री भूतोड़िया की दिली तमन्ना यह थी कि वो लंदन से अपनी आगे की पढ़ाई पूरी करे. इसके लिए उनके परिवार वालों ने उन्हें लंदन बीएम की पढ़ाई के लिए भेजा. वहां उन्होंने एक लंबे समय तक प्रवास किया और भारत की ही एक अप्रवासी कंपनी में रहकर निर्यात के व्यवसाय का अनुभव हासिल किया. इनका जूट का पैतृक व्यवसाय था, जो आज भी केसरीचंद छत्तरसिंह के नाम से चल रहा है. अपने पिता के इस व्यवसाय में श्री भूतोड़िया ने 19 वर्ष की आयु से ही दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी. वे इस कंपनी का निर्यात का कार्य देखते थे. इसी दौरान पिता श्री अमरचंद भूतोड़िया के आकस्मिक

निधन के बाद घर की सारी जिम्मेदारियां इन पर आ गयीं. उस अवस्था में उन्होंने तमाम परेशानियों और बाधाओं को पार करते हुए अपनी नयी निर्यात कंपनी की नींव रखी. इनकी कंपनी का नाम इएसएसबीईई नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड (चेन्नई), उदित फाइनवेस्ट एंड ट्रेडर्स प्राइवेट लिमिटेड (कोलकाता) तथा प्रभा एसोसिएट्स लिमिटेड (कोलकाता) है. इन कंपनियों के ये स्वयं निदेशक हैं. इसके साथ शासन प्रोजेक्ट इंडिया लिमिटेड, लेस फ्लेइस (स्विटजरलैंड), पारखलैंड एंड हाउसिंग डेवलपमेंट प्राइवेट लिमिटेड (चुरू) इत्यादि कंपनियों के सलाहकार समिति में शामिल हैं. समाजसेवा के साथ-साथ टेनिस, गोल्फ, ड्रामा और यात्राओं का शौक रखने वाले श्री भूतोड़िया वर्तमान में एजुकेशन फार ऑल ट्रस्ट, प्रभा वेलफेयर ट्रस्ट, प्रभा सांस्कृतिक संस्थान, प्रभा चेरिटेबल ट्रस्ट, इएसएसबीइइ फांउडेशन के ट्रस्टी व अंतरराष्ट्रीय मारवाड़ी सम्मेलन के युवा शाखा के अध्यक्ष एवं मुक्ति यूथ विंग के संयोजक भी हैं. इसके अलावा वे कई व्यावसायिक तथा सामाजिक संगठनों जैसे इंडो-यूरो चेंबर आफ ट्रेड एंड कामर्स, यूनेस्को क्लब, दी डिबेट सोसायटी, तिरुपति बालाजी फांउडेशन, हिंदी साहित्य उत्थान समिति तथा क्राइम रिफार्म एसोसिएशन आफ इंडिया की कार्यकारिणी के सदस्य हैं.

अपनी माता कुसुम भूतोड़िया को अपनी सफलता का श्रेय देने वाले श्री भूतोड़िया कहते हैं कि अच्छे संस्कारों के कारण ही सामाजिक तथा स्वच्छ परिवेश में रहने की प्रेरणा मिली. ये सभी गुरुजनों तथा विशिष्ट लोगों का आशीर्वाद ही है कि आज इस प्रतिस्पर्धा के युग में अपने आप को स्थिरता प्रदान करने का अवसर मिला, एक मंजिल मिली. वे कहते हैं कि अपनी व्यावसायिक वयस्तता के बीच व्यक्ति को अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का भी निर्वहन करना चाहिए. वे कहते हैं कि युवा वर्ग किसी भी कार्य को अंजाम देने में पूर्ण सक्षम है. सामाजिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र दोनों में आज युवा वर्ग की हर राष्ट्र को जरूरत है. 1998 में ग्रीस के कोरफू में हुए स्टुडेंट वर्ल्ड कांग्रेस में हिस्सा लिया था. इसके अलावा डेनमार्क में हुए वर्ल्ड स्टुडेंट फार पीस में हिस्सा लिया था. इस कांफ्रेंस में वेस्ट वियूअर अवार्ड का सम्मान मिला था. इसके अलावा लंदन में आयोजित हुए इंटरनेशनल यूथ कंवेंशन में भी इन्हें वेस्ट स्पीकर का पुरस्कार मिला. इसके अलावा शिक्षा के लिए भी उन्हें कई पुरस्कार मिल चुके हैं. वेस्ट बंगाल स्टूडेंट वेलफेयर सोसायटी ने इन्हें स्टार ब्वाय आफ दी इयर से सम्मानित किया था. दुनिया के कई देशों में इनके काम फैले हुए हैं. वे हमेशा ही दुनिया के विभिन्न देशों का दौरा करते रहते हैं. अंतरराष्ट्रीय मारवाड़ी सम्मेलन की युवा शाखा की उन्होंने अपने प्रयासों से 27 देशों में शाखाएं स्थापित कीं.

-सच्चिदानंद पारीक

प्रभात खबर, कोलकाता, मंगलवार, 18 सितंबर 2001

चूरू। विद्यालय के उद्घाटन समारोह में भाग लेकर लौटते राज्यपाल अंशुमानसिंह। साथ में अंतरराष्ट्रीय मारवाड़ी युवा सम्मेलन के अध्यक्ष संदीप भूतोड़िया, खेल मंत्री मा. भंवरलाल मेघवाल व जिले के अन्य विशिष्टजन।

दैनिक भास्कर, जयपुर, 10 अक्तूबर, 2001

राजस्थान के राज्यपाल अंशुमान सिंह के पहली बार चुरू आगमन पर नर्वदा देवी विद्यालय के उद्घाटन कार्यक्रम में राज्यपाल के साथ क्षेत्रीय सांसद रामसिंह, मंत्री भंवरलाल मेघवाल और क्षेत्र के प्रवासी युवा उद्योगपति संदीप भूतोड़िया व अन्य।

शिक्षा बच्चे का मौलिक अधिकार : अंशुमान सिंह

चुरू, ११ अक्तूबर (जनसत्ता)। राजस्थान के राज्यपाल अंशुमान सिंह ने प्राथमिक शिक्षा की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि शिक्षा हर बच्चे का मौलिक अधिकार है और इस संबंध में केंद्र सरकार जल्द ही संसद में एक बिल पेश करेगी। राज्यपाल यहां नर्वदा देवी विद्यालय के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन के मौके पर बोल रहे थे। राज्यपाल पहली बार चुरू क्षेत्र के दौरे पर आए थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सांसद रामसिंह ने की। स्थानीय विधायक राजेंद्र राठौड़, राज्यमंत्री भंवरलाल और प्रवासी उद्योगपति संदीप भूतोड़िया के अतिरिक्त जिलाधिकारी राम अवतार एवं बाबूलाल सोनी भी मौजूद थे। विद्यालय के उद्घाटन के बाद राज्यपाल ने बिसाऊ में शहीद रामस्वरूप की प्रतिमा का अनावरण किया। शाम साढ़े पांच बजे राज्यपाल झुंझनू हवाई पट्टी से जयपुर लौट गए। उनके साथ पूर्वमंत्री राजेंद्र राठौड़, संदीप भूतोड़िया व राज्यपाल के सचिव बीएस सिंह भी जयपुर गए।

जनसत्ता, कोलकाता, 12 अक्तूबर 2001

राजस्थान के राज्यपाल अंशुमान सिंह के पहली बार चुरू आगमन पर नर्वदा देवी विद्यालय के उद्घाटन कार्यक्रम में राज्यपाल के साथ क्षेत्रीय सांसद रामसिंह, मंत्री भंवरलाल मेघवाल और क्षेत्र के प्रवासी युवा उद्योगपति संदीप भूतोड़िया व अन्य।

शिक्षा बच्चे का मौलिक अधिकार : अंशुमान सिंह

चुरू, ११ अक्तूबर (जनसत्ता)। राजस्थान के राज्यपाल अंशुमान सिंह ने प्राथमिक शिक्षा की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि शिक्षा हर बच्चे का मौलिक अधिकार है और इस संबंध में केंद्र सरकार जल्द ही संसद में एक बिल पेश करेगी। राज्यपाल यहां नर्वदा देवी विद्यालय के नवनिर्मित भवन के ब्राटन के मौके पर बोल रहे थे। राज्यपाल पहली बार चुरू क्षेत्र के दौरे पर आए थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सांसद रामसिंह ने की। स्थानीय विधायक राजेंद्र राठौड़, राज्यमंत्री भंवरलाल और प्रवासी उद्योगपति संदीप भूतोड़िया के अतिरिक्त जिलाधिकारी राम अवतार एवं बाबूलाल सोनी भी मौजूद थे। विद्यालय के ब्राटन के बाद राज्यपाल ने बिसाऊ में शहीद रामस्वरूप की प्रतिमा का अनावरण किया। शाम साढ़े पांच बजे राज्यपाल झुंझनू हवाई पट्टी से जयपुर लौट गए। उनके साथ पूर्वमंत्री राजेंद्र राठौड़, संदीप भूतोड़िया व राज्यपाल के सचिव बीएस सिंह भी जयपुर गए।

जनसत्ता, कोलकाता, १२ अक्टूबर, २००१

बहुत देर कर दी : संदीप

युवा उद्योगपति और समाजसेवी संदीप भूतोड़िया का कहना है कि अमेरिका को जो लड़ाई ग्यारह सितंबर की घटना के तत्काल बाद शुरू करनी थी, उसे उसने महीने भर बाद शुरू की है। इससे आतंकवादी तो अपने छिपने के ठिकानों पर सुरक्षित पहुंच गए लेकिन आम जनता अमेरिकी हमले का शिकार हो रही है। इसलिए संदीप अमेरिका के इस हमले के एकदम विरुद्ध है। वे कहते हैं कि अब मामला बातचीत से ही सुलझाना चाहिए। और सिर्फ बिन लादेन का ही आतंकवाद नहीं, कश्मीर में फैले पाकिस्तानी आतंकवादियों पर रोक लगाने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाने चाहिए। सिर्फ तभी अमेरिका आतंकवाद को नेस्तनाबूद करने के अपने फैसले पर अमल कर पाएगा।

संदीप भूतोड़िया नहीं मानते कि इस्लाम आतंकवादियों को पनाह दे रहा है। उनका कहना है कि यह सच है कि आतंकवादी पूजा स्थलों में ही पनाह लेते हैं और धर्म का मुखौटा ओढ़कर आतंकवादी कार्रवाइयों को जिहाद बताते हैं। पर इस्लाम ऐसे जिहादियों को अपने यहां कोई स्थान नहीं देता।

जनसत्ता, कोलकाता, १९ अक्टूबर, २००१

२ जनसत्ता, कोलकाता, २३ नवंबर २००१

'एजूकेशन फॉर आल' की मदद से पढ़ाई

कोलकाता, २२ नवंबर (जनसत्ता)। 'महोदय, मैं एक निर्धन ब्राह्मण कन्या हूं, जिसका पिता पागल और घर में कोई कमाने वाला नहीं है। मेरी पढ़ाई सुचारु रखने के लिए मुझे निम्न प्रकार की आर्थिक सहायता की आवश्यकता है-

फीस- ६९० रुपए।
ड्रेस (चुन्नी, सलवार, कुर्ता, जूता मोजा व सिलाई)- ५०० रुपए।
कापियां- २०० रुपए।
पुस्तकें -१९० रुपए।
कुल - १५८० रुपए।

मैं राजस्थान के सीकर जिले के रामगढ़ सेठों का कस्बे के सेठ आरएन रुईया सीनियर गर्ल्स हाई स्कूल में नवें दर्जे की छात्रा हूं। आठवीं के बोर्ड में मुझे ७१ प्रतिशत अंक प्राप्त हुए हैं। अगर मुझे एक साल के लिए यह खर्च मिल जाए तो मैं आपकी कृपा से नवां दर्जा पास कर लूंगी।'

सुदूर राजस्थान के सीकर जिले के दूर-दराज गांव की इस लड़की-निर्मला शर्मा का पत्र कोलकाता के 'एजूकेशन फार आल' संस्था को मिला है। ऐसे सैकड़ों पत्र इस संस्था के पास पूरे देश भर से आते हैं। किसी में डेढ़ हजार, किसी में दो और किसी में तीन हजार की राशि की मांग साल भर के लिए की जाती है। ताकि वह विद्यार्थी अपनी पढ़ाई जारी रख सके। प्रभा खेतान वेलफेयर ट्रस्ट और अंतरराष्ट्रीय मारवाड़ी सम्मेलन की युवा शाखा द्वारा संचालित यह संस्था देश भर के गरीब छात्रों को आर्थिक मदद करती है।

इसमें खास बात यह है कि संस्था मदद पानेवाले छात्र की सिर्फ आर्थिक स्थिति को ही देखती है। संस्था के संयोजक संदीप भूतोड़िया का कहना है कि अगर बच्चे को घर में शिक्षा का उत्तम माहौल मिले तो पढ़ने-लिखने में रुचि रखने वाला कोई भी छात्र अच्छे नंबर पा सकता है। लेकिन उसे कापी किताबें तक नहीं मिलें तो उससे अच्छे नंबरों की उम्मीद की भी कैसे जाए।

श्री भूतोड़िया, जो अंतरराष्ट्रीय मारवाड़ी सम्मेलन की युवा शाखा के अध्यक्ष भी हैं, ने बताया कि 'एजूकेशन फार आल' की प्रेरणा उन्हें नोबल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन के दर्शन से मिली। इस योजना के लिए शुरुआती २५ लाख रुपए की मदद प्रभा खेतान वेलफेयर ट्रस्ट ने दी। इस राशि की एक चौथाई रकम सिर्फ राजस्थान के शेखावाटी आंचल के छात्रों को मदद करने के मकसद से सुरक्षित रखी गई है। योजना के तहत चार तरह के कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं।

'एजूकेशन फार आल' संस्था के सामग्री वितरण कार्यक्रम में एक विकलांग बच्चे को लेकर आते संस्था के संयोजक संदीप भूतोड़िया। सेंट थामस गर्ल्स स्कूल की वाइस प्रिंसीपल श्रीमती जी. प्रबाल एक बच्चे को यह सामग्री दे रही हैं तथा उनके बगल में बैठे हैं उद्योगपति रूंसी मोदी।

एक- छात्रों को आर्थिक मदद करना, दूसरा- झोपड़पट्टियों में जाकर वहां के बच्चों के बीच भोजन, फल और स्टेशनरी वितरित करना, तीसरा- कुछ पढ़े लिखे लोगों को रोजगार देकर झोपड़पट्टियों के बच्चों को पढ़ाना तथा चौथा कार्यक्रम है- निर्धन छात्रों को पाठ्यपुस्तकों के अलावा चिकित्सकीय खर्च एवं उनके दूसरे खर्चों को पूरा करना।

श्री भूतोड़िया के मुताबिक एजूकेशन फार आल संस्था कोई डेढ़ साल से काम कर रही है। और अब तक ढ़ाई हजार से ज्यादा छात्र इससे लाभान्वित हो चुके हैं। हर हफ्ते हमारे पास सैकड़ों अर्जियां आतीं हैं। उनमें से हम छात्रों का चयन करते हैं। पर बड़ी दिक्कत तो तब आती है जब आर्थिक मदद चाहने वाले छात्र अपने आवेदन में अपना पूरा पता तक नहीं लिखते। इससे होता यह है कि हमारी मदद बैरंग वापस लौट आती है।

संदीप भूतोड़िया बताते हैं कि संस्था ने अपने सदस्यों से एक-एक बच्चा गोद ले कर उसके साल भर की पढ़ाई-लिखाई का खर्च उठाने की योजना भी शुरू की है। इसके लिए निर्धन छात्रों से आवेदन मंगाए जाते हैं फिर सदस्यों की रुचि के आधार पर उन्हें गोद दे दिया जाता है।

इसका पैमाना तय करने के लिए एक सलाहकार समिति बनाई गई है। जिसके रूसी मोदी समेत नौ सदस्य हैं। कोलकाता के साउथ प्वाइंट हाई स्कूल के प्रिंसीपल डॉ अमर नाथ बनर्जी, वेलेंड गोल्डस्मिथ स्कूल की प्रिंसीपल मिस जीआरडी कोस्टहार्ट, सेंट थामस गर्ल्स हाई स्कूल की वाईस प्रिंसीपल श्रीमती जी. प्रबाल, सेंट जेवियर्स कालेज के प्रिंसीपल फादर पीसी मैथ्यूज, जेडी बिड़ला इंस्टीच्यूट आफ होम साइंस की प्रिंसीपल डॉ जे. सेनगुप्ता, श्री जैन विद्यालय के प्रिंसीपल प्रो. एससी पाठक और उषा मार्टिन टेलीकॉम के प्रबंध निदेशक अरुण कपूर।

हिंदी की जानीमानी लेखिका डॉ प्रभा खेतान ही इस संस्था के खर्च को मुख्यतः वहन करती हैं। और उन्हीं के शुरुआती अनुदान से यह संस्था खड़ी हुई है। पश्चिम बंगाल, राजस्थान, मध्यप्रदेश व दक्षिण भारत के छात्रों को नियमित मदद यह संस्था करती है। श्री भूतोड़िया कहते हैं-'शिक्षा को मौलिक अधिकार बताने का दावा तो बहुत लोग करते हैं लेकिन आगे आकर निर्धन छात्रों की मदद करना ज्यादा बड़ा काम है। फिर भी देखिए ज्यादातर लोग ऐसी संस्थाओं को मदद करने से कन्नी काटते हैं।'

जनसत्ता, कोलकाता, २३ नवम्बर, २००१

गोष्ठी में अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान बोलते हुए। दायें श्री संदीप भूतोड़िया, श्री नन्दकिशोर जालान। -फोटो : छपते छपते

गहलोत के नेतृत्व में राजस्थान में उत्साहजनक परिवर्तन

कोलकाता, 2 दिसंबर (संवाददाता)। राजस्थान में अशोक गहलोत की सरकार के तीन वर्ष की पूर्ति पर कलकत्ता स्थित राजस्थान सूचना केन्द्र ने कल एक गोष्ठी आयोजित की। केन्द्र के संचालक श्री जयदीप भट्टाचार्य ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा तीन वर्षों में जन कल्याण मूलक उठाये कदम से प्रवासी राजस्थानियों को अवगत कराना है। इस गोष्ठी का मूल उद्देश्य है। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने कहा कि राजस्थान में तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं एवं यह राज्य अब पिछड़ा हुआ प्रदेश नहीं रह गया है। उन्होंने कहा कि जो समस्याएं हैं उनके समाधान के लिये सरकार सक्रिय है। राजस्थान का व्यक्ति दुनिया के जिस हिस्से में गया है वहां वह सफल हुआ है।

छपते छपते के संपादक श्री विश्वम्भर नेवर ने कहा कि श्री गहलोत में संगठन की अद्‌भुत क्षमता है। उन्हें एक दिवालिया सरकार विरासत में मिली थी किन्तु तीन वर्ष में वित्तीय स्थिति को बेहतर करने की चेष्टा हुई है। श्री नेवर ने कहा कि सूचना प्राप्त करने का मौलिक अधिकार देकर गहलोत सरकार ने प्रशासन को पारदर्शी बनाया है एवं भ्रष्टाचार प्रवृत्तियों को कम करने का प्रयास किया गया है। श्री नेवर ने यह भी कहा कि सती प्रथा, बाल विवाह जैसी कुप्रथा राजस्थान में आज भी विद्यमान है लेकिन इसका समाधान सामाजिक दबाव के माध्यम से ही हो सकता है। राजस्थान के लोगों में जैसे शिक्षा एवं विवेक बढ़ रहा है ऐसी कुप्रथाओं से राजस्थान को मुक्त कराया जा सकेगा, ऐसी उम्मीद है।

युवा उद्योगपति श्री संदीप भुतोड़िया ने कहा कि गहलोत सरकार ने अन्तर्राष्ट्रीय राजस्थानी सम्मेलन का आयोजनकर राज्य में औद्योगिकरण एवं विकास के नये आयाम की सृष्टि की है। राज्य में पूंजी निवेश में उत्साहजनक वृद्धि हुई है एवं श्री गहलोत के प्रति लोगों में विश्वास जागा है। बीकानेर से आये पत्रकार श्री प्रकाश पुगलिया (संपादक देश और व्यापार) ने भी अपने विचार रखे। इस गोष्ठी में सामाजिक कार्यकर्ता एवं विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

छपते - छपते, ३ दिसम्बर २००१

'एजुकेशन फॉर ऑल' से गरीब छात्रों की मदद

पिछले डेढ़ साल से एजुकेशन फॉर ऑल संस्था द्वारा वंचित बच्चों के शिक्षा के लिये कई तरह के कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। प्रभा खेतान वेलफेयर ट्रस्ट और अन्तरराष्ट्रीय मारवाड़ी सम्मेलन की युवा शाखा द्वारा संचालित यह संस्था देश भर के गरीब छात्रों को आर्थिक मदद करती है। यह जानकारी श्री संदीप भूतोड़िया ने एक विज्ञप्ति में दी है। उन्होंने यह भी सूचित किया है कि संस्था चार तरह के कार्यक्रमों का संचालन कर रही है। पहला- छात्रों को आर्थिक मदद करना दूसरा- झोपड़पट्टियों में जाकर वहां के बच्चों के बीच भोजन, फल और स्टेशनरी वितरित करना, तीसरा- कुछ पढ़े-लिखे लोगों को रोजगार देकर झोपड़पट्टियों के बच्चों को पढ़ाना तथा चौथा कार्यक्रम है-निर्धन छात्रों को पाठ्यपुस्तकों के अलावा चिकित्सकीय खर्च एवं उनके दूसरे खर्चों को पूरा करना। अब तक ढाई हजार से ज्यादा छात्र इससे लाभान्वित हो चुके हैं। इस संस्था की एक सलाहकार समिति भी है, जिसके नौ सदस्यों में जाने-माने शिक्षाविद शामिल है। हिन्दी की जानी-मानी लेखिका डा. प्रभा खेतान ही इस संस्था के खर्च को मुख्यत: वहन करती है।

दैनिक छपते - छपते, कोलकाता, ४ दिसम्बर २००१

Sandeep Bhutoria

Businessman and social worker, in Manhattan for an NGO conference

● **The attack:** We were scheduled to go to WTC at 9 am, but at the last moment, our visit got cancelled. From the 40th floor of the Millennium Hotel, I saw the second hijacked plane crash into the WTC tower.

● **The aftermath:** I can still see the flames from my hotel room. I couldn't call my family back in Calcutta at first, nor could I leave Manhattan. The conference has been cancelled and I am trying desperately to book a ticket back home but all flights have been stopped. After a bomb scare in the Empire State Building last night, we were all evacuated from the hotel, so I have decided that I can't stick around in Manhattan.

TELEGRAPH, KOLKATA, FRIDAY 14 SEPTEMBER 2001

भूतोड़िया विश्व शान्ति व बन्धुत्व संघ के सह सचिव

चूरू, 26 दिसम्बर [नि.सं.]। शेखावाटी अंचल के निवासी अन्तरराष्ट्रीय मारवाड़ी युवा सम्मेलन के अध्यक्ष सन्दीप भूतोड़िया को विश्व शान्ति व बन्धुत्व संघ के सह सचिव पद पर मनोनीत किया गया है।संयुक्त राष्ट्र से मान्यता प्राप्त इस संगठन के अखिल भारतीय अध्यक्ष पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर की अध्यक्षता वाले इस संगठन के महासचिव प्रो. प्रबोधचन्द सिन्हा ने सन्दीप भूतोड़िया को संघ सह सचिव पद पर मनोनीत किया है।अनेक राजनीतिक एवं सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ताओं ने भूतोड़िया को बधाई दी है तथा सिन्हा के प्रति आभार प्रकट किया है।

राजस्थान पत्रिका २७ दिसम्बर २००१

श्री श्याम सत्संग मण्डल, घुसुड़ीधाम द्वारा आयोजित राष्ट्रभक्ति भजन अमृत वर्षा समारोह को संबोधित करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सात्यनारायण बजाज, साथ में सुपरिचित भजन सम्राट श्री अनुप जलोटा एवं सर्वश्री प्रकाश चन्द्र टिबड़ेवाल, सज्जन सराफ, भैरवदत्त खेतान, राजकुमार शर्मा, प्रकाश चण्डालीया, संदीप भुतोड़िया।

'विश्वमित्र'

'प्रगति', हिन्दमोटर द्वारा आयोजित मेधावी छात्र सम्मान एवं नि:शुल्क चश्मा वितरण समारोह का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए अंतर्राष्ट्रीय मारवाड़ी सम्मेलन युवा शाखा के निदेशक श्री दिनेश बजाज, साथ में हैं संस्था अध्यक्ष श्री कुंजबिहारी गुप्ता, सचिव श्री संजय जैन, सम्मेलन की वृहत्तर हावड़ा शाखा अध्यक्ष श्री राजकुमार शर्मा, श्री प्रकाश चंडालिया, श्री इन्द्रचन्द्र अग्रवाल, युवा शाखा अध्यक्ष श्री संदीप भुतोड़िया। (विश्वमित्र)

विश्वमित्र, कोलकाता

अन्तर्राष्ट्रीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के स
बंगाल के पूर्व मुख्यमंत्री श्री सिद्धार्थ शंकर राय, राजस्थान के गृह एवं उद्योग मंत्री श्री
द्वय श्री हरेन्द्र मिर्धा, श्री दीपेन्द्र शेखावत, स्थानीय विधायक द्वय श्री राजेश खेतान,
काबरा, सम्मेलन अध्यक्ष श्री सत्यनारायण बजाज, श्री मदनलाल पाटोदिया, पूर्व केन्द्र
सज्जन सराफ, देवेन्द्र झुनझुनवाला, दिनेश बजाज, संदीप भुतोड़िया, राजकुमार शर्म
भोला सोनकर।

हिन्दुस्तान क्लब द्वारा नलबन शरद पूर्णिमा पर आयोजित रास गरवा एवं डांडिया कार्यक्रम के अवसर पर लिए गए चित्र में नयन साह, रामकृष्ण भुवालका, मदनलाल बंका, जिला मजिस्ट्रेट देवीप्रसाद जाना, मोहनलाल तुलस्यान, सूर्यकान्त दम्मानी तथा नीचे डांडिया प्रस्तुत करते हुए सदस्य एवं सदस्याएं।

हिन्दुस्तान क्लब द्वारा रास गरवा एवं डांडिया का कार्यक्रम

कलकत्ता, २५ अक्टूबर। क्लब परिषद में भवन निर्माण की गतिविधियों के कारण स्थानाभाव होने से क्लब ने पहली बार शरद पूर्णिमा का आयोजन साल्टलेक में नलबन के प्रांगण में मधुर चन्द्रमा की रोशनी में बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया। जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। करीब ९० से १०० सदस्य एवं बच्चे ने रास गरबा, डांडिया में झूमते रहे एवं प्रतियोगिता में भाग लिया। जिसमें प्रथम विजेता चिराग एवं ख्याति बसाली रही। जिन्हें अतिथियों में आये श्री सन्दीप भूतोड़िया ने अन्तर्राष्ट्रीय मारवाड़ी फेडरेशन की तरफ से दो बैंकाक आने जाने की टिकट उपहार स्वरूप प्रदान की।

क्लब के अध्यक्ष श्री मोहनलालजी तुलस्यान ने भारी संख्या में सदस्यों की उपस्थिति एवं उत्साह देखकर सबों को धन्यवाद दिया। उत्तर २४ परगना के अतिरिक्त जिला न्यायाधीश श्री देवी प्रसाद जाना ने क्लब के प्रोग्राम की सराहना की। अन्त में नलबल के सौजन्य से बोटिंग लफ में आतिशबाजी का आयोजन भी बहुत ही आकर्षित था। कार्यक्रम को सफल बनाने में सूर्यकान्त दम्मानी, सुरेश बागड़ी, सुरेन्द्र तुलस्यान, देवेश एवं नीरू साह का विशेष योगदान रहा।

दैनिक विश्वमित्र, कोलकाता, २६ अक्टूबर, २०००

जीवनशैली

कंक्रीट के जंगल में थोड़ी-सी हरियाली

उस बहुमंजिली इमारत के सबसे ऊपरी तले पर छत के एक किनारे फैला है प्रकृति का हरा-भरा आंचल। एक कोने में झरता रहता है निपट पहाड़ी सोते का कल-कल पानी। पसरा हुआ है मखमली घास का हरा गलीचा। चिड़ियों की चहचहाहट गूंजती है इस हरियाली में। और सीढ़ियों से ड्राइंग रूम तक अपनी

लिफ्ट से ऊपरी मंजिल पर पहुंचकर जैसे ही संदीप के घर यानी फ्लैट में जाने के लिए सीढ़ियां चढ़ेंगे, एक बिल्कुल अलग दुनिया में प्रवेश करने का एहसास होगा। सीढ़ियों की दीवार पर माधुरी दीक्षित को लेकर बनाई गई मकबूल फिदा हुसैन की 'गजगामिनी' श्रृंखला की छह कलाकृतियां एक क्रम से लगी हुई हैं। इधर से जैसे ही दृष्टि सामने पड़ेगी तो गमलों में सजे पौधों के बीच दिखेगी एक प्रशस्त कलात्मक प्रतिमा, उसके ऊपर सूर्यचक्र, मध्ययुगीन राजस्थानी

हरियाली की ओर जाती सीढ़ियां

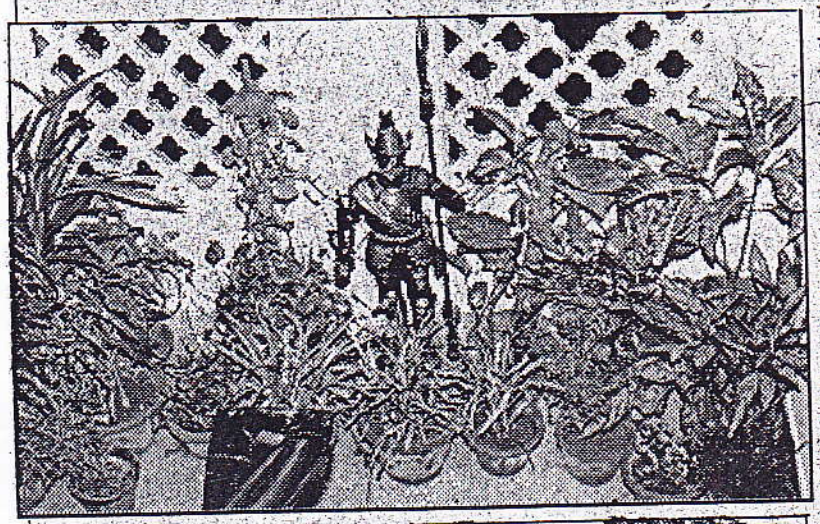

अस्त्र दो बल्लमें दीवार से आड़ी लगी हुई।

फ्लैट के ड्राइंग रूम की कांच की एक तरफ की दीवार के पार झांकता है हरियाली का हरा-भरा संसार। यह एक ऐसी मनोहारी दुनिया है जो बरबस आपको एक नए परिवेश में खींच लेती है। रात की जगमग रोशनी में हरियाली के इस बगीचे का मायावी माहौल ऐसी स्निग्धता से मन को भर देता है कि आप भूल जाते हैं कि कंक्रीट की नगरी में ही हैं। नंगे पांव के नीचे बिछा मेक्सिकन घास का ओस भींगा नरम गलीचा अपनी शीतल कोमलता से सारी थकान दूर कर ताजगी से भर देता है। हवा चले तो बगीचे के कोने में बहते कल-कल, छल-छल पहाड़ी सोते के पास खड़ा तुलसी का पौधा झूम उठता है और नाच उठते हैं बगीचे के सारे लता-पात। अब जूही और रातरानी भी शामिल हो गई है संदीप भूतोड़िया के इस घर-बगीचे में। अभी थोड़ा समय लगेगा, लेकिन जब खिलेंगी ये पुष्प लताएं तो महक उठेगा सारा घर-बगीचा।

अभी हल्की, रंग बिखेरती रोशनी में आंख-मिचौली खेलती हरियाली में हम खोए ही थे कि चिड़ियों की मद्धिम चहकार ने ध्यान खींचा। ऊपर नजर गई तो देखा कि जालीदार बाल्कनीनुमा, लंबा, चिड़ियों का एक घरौंदा नीम रोशनी में अधजागा-अधसोया है।

संदीप भूतोड़िया के पंछी-परिवार में कुल अट्ठारह मेंबर हैं, और सभी जोड़े में। यानी नौ जोड़े। उन्होंने तेज रोशनी करके हमें अपने पंछी दिखाने चाहे तो सबके-सब अपने घोंसलों में जा छिपे और दरवाजों से गरदन निकाल कर हमें देखने लगे। आखिरकार पंछियों की सुविधा के लिए तेज रोशनी बुझा दी गई। काकातुआ, लेपचू, सोरोगिन और कठचील आदि देसी-बिदेशी पंछियों का घरौंदा यहीं एक कतार में है। यानी सभी एक-दूसरे के पड़ोसी हैं लेकिन

निश्चित जगह पर प्रकृति के ऋतु-चक्र का अनुशासित जीवन जीने में निमग्न हैं अमरूद, नींबू, नासपाती के सात-आठ बोंसाई पौधे। इनमें एक वृक्ष तो पंद्रह साल पुराना है।

कुदरत का यह मनोहारी जादुई संसार रचा है कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े, महानगर कलकत्ता के युवा उद्यमी संदीप भूतोड़िया ने। दक्षिण कलकत्ता के आधुनिक, अभिजात इलाके लैंसडाउन स्ट्रीट और इसके इर्द-गिर्द फैले बहुमंजिली इमारतों के कंक्रीट के जंगल में यह थोड़ी-सी हरियाली अपने फ्लैट में समेटकर बड़े जतन से रखा है संदीप ने।

जनसत्ता सबरंग, कोलकाता, १३ अगस्त २०००

हैं अलग-अलग 'घरों' में। क्योंकि चिड़ियों की आदतें अलग हैं, खान-पान और रहन-सहन अलग-अलग हैं। इन चिड़ियों की देख-रेख करना और इन्हें हमेशा खुशमिजाज रखना कोई असान काम नहीं है। अब जैसे मध्य-पूर्व के पक्षी सोरेगिन दिन में अपने घरौंदे में दुबके रहते हैं और रात में बाहर निकलते हैं और ठीक इसके उलट सफेद अफ्रीकी तोते काकातुआ आम चिड़ियों की तरह सुबह घरौंदे से बाहर निकलते हैं। चिड़ियों का खाना-दाना भी अलग-अलग है। काकातुआ तिल के साथ सूरजमुखी के बीज खाते हैं। सिंगापुरी पक्षी है लेपचू, सो उसके नाज-नखरे अलग हैं। लेकिन लेपचू के जोड़े को संदीप का घरौंदा इतना रास आया है कि उन्होंने यहां अंडे-बच्चे दिए हैं।

इन चिड़ियों को दिन में तीन बार पानी के साथ बिटामिन देनी पड़ती है। वातावरण की प्रतिकूलता को झेलनेलायक बनाने के लिए हर रविवार को सेल्टलेन प्लस कैप्शूल भी खिलाया जाता है। महीने में दो बार डाक्टर इन चिड़ियों की सेहत की जांच कर जाते हैं।

घर-बगीचे की प्रकृति और पक्षी-लोक की इस चर्चा से ऐसा लग सकता है कि इनके बीच रहनेवाला संदीप भूतोड़िया नामक शख्स कहीं महानगरीय जीवन से ऊबा एकांतवासी तो नहीं है? जी नहीं, हरगिज नहीं।

२७ वर्षीय युवा उद्यमी संदीप अंतरराष्ट्रीय मारवाड़ी सम्मेलन की युवा शाखा का अध्यक्ष होने के साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं जो स्मृति, संस्कार, संस्कृति के बल पर आधुनिकता से मुठभेड़ करते हैं। विदेशी यात्राओं और शिक्षा के संस्पर्श के साथ भारतीय कला और सौंदर्यबोध ने उन्हें एक ऐसे विवेक से समृद्ध किया है जिसकी झलक उनके कलाप्रिय प्रकृति-सौंदर्य से भरी रहन-सहन की जीवन शैली में बखूबी देखी जा सकती है।

चिड़ियों का घरौंदा

बोंसाई की एक और पौध

घर-बगीचे की हरियाली

पंद्रह साल पुराना बोंसाई

अ च

फोटो : दिलीप दत्त

रास गरबा व डांडिया का आयोजन

कलकत्ता, २५ अक्तूबर (जनसत्ता)। हिंदुस्तान क्लब ने शरद पूर्णिमा के मौके पर रास गरबा व डांडिया कार्यक्रम का आयोजन साल्टलेक के नलबन प्रांगण में किया। सदस्यों व बच्चों ने रास गरबा, डांडिया में झूमते रहे व प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। जिसमें प्रथम विजेता चिराग और ख्याति बागली हुए। इन्हें क्लब की ओर से पुरस्कृत किया गया।

संदीप भूतोड़िया ने अंतरराष्ट्रीय मारवाड़ी फेडरेशन की ओर से प्रथम विजेताओं को दो बैंकाक आने जाने का टिकट उपहार स्वरूप दिया गया।

क्लब के अध्यक्ष मोहन लाल तुलस्यान ने कहा कि आनेवाले वर्षों में जब तक नया भवन का निर्माण नहीं हो जाता, क्लब के सभी आयोजन बाहर करने पड़ेंगे। उद्घाटन भाषण उत्तर चौबीस परगना के अतिरिक्त जिला न्यायाधीश देवी प्रसाद जाना ने दिया।

डांडिया करते बच्चे

जनसत्ता, कोलकाता, २०००

अभिमत

भरोसा है उपमहापौर पर

नवल जोशी

महानगर की मशहूर सांस्कृतिक संस्था 'अदाकार' के अध्यक्ष नवल जोशी कलकत्ता नगर निगम के उप महापौर जैसे महत्वपूर्ण पद पर मीना पुरोहित के रूप में पहली बार महिला पार्षद के चुने जाने पर खुशी जताते हुए कहते हैं, 'मीना पुरोहित के काम-काज पर भरोसा करने का जी चाहता है। इसकी वजह है कि मध्यवर्गीय परिवार से आई श्रीमती पुरोहित सच्चे अर्थों में जमीन से जुड़ी हुई हैं। उन्हें आम नागरिकों की समस्याओं का अनुभव और समझ दोनों है।

श्री जोशी कहते हैं, जहां तक मैं जानता हूं एक विशेष राजनीतिक दल की कार्यकर्ता होने के बावजूद वे सभी दल के लोगों के लिए समान भाव से काम करती हैं और समस्याएं हल करने व लोगों की मदद के मामले में राजनीतिक भेदभाव नहीं रखतीं।

मीना पुरोहित की सफलता व लोकप्रियता का कारण जोशी के अनुसार यह है कि वे अपने वार्ड के लोगों के जीने-मरने से लेकर हर छोटे-बड़े निजी अथवा सार्वजनिक आयोजन में बड़े सहज व आत्मीय ढंग से भाग लेती हैं। उनकी लोकप्रियता अपने वार्ड में वैसी ही है, जैसी जयपुर में सांसद गिरधारी लाल भार्गव की। यही वजह है कि दिग्गजों को हराकर वे जीतती आ रही हैं।

नवल जोशी को उम्मीद है कि सरकारी बाधाएं-लालफीताशाही, आड़े न आए और पैसे की कमी न पड़े तो उप महापौर के बतौर श्रीमती पुरोहित अपनी जिम्मेदारियों व जवाबदेही के मामले में जरूर खरी उतरेंगी। यों वे अपने कामकाज की शैली की वजह से भी ६०-७० प्रतिशत तो सफल होंगी ही।

साथ लेकर चलें

संदीप भूतोड़िया

अंतरराष्ट्रीय मारवाड़ी सम्मेलन के युवा शाखा के अध्यक्ष व महानगर की कई अन्य सामाजिक संस्थाओं से संबद्ध युवा उद्यमी संदीप भूतोड़िया के मुताबिक नगर प्रमुख अगर वाकई कलकत्ता शहर के लिए कुछ करना चाहते हैं तो उन्हें शहर की सामाजिक संस्थाओं को साथ लेकर ही जनहित के काम में जुटना चाहिए। श्री भूतोड़िया का कहना है कि पिछले ३० वर्षों से कलकत्ता शहर में नागरिक सुविधाएं तेजी से घटी हैं। जहां दूसरे महानगर बड़ी सज-धज के साथ कलकत्ता से बहुत आगे निकल गए, वहीं यह शहर अपना प्राचीन गौरव भी खो बैठा है।

श्री भूतोड़िया चाहते हैं कि कलकत्ता की सड़कों की रोज धुलाई होनी चाहिए क्योंकि सड़कें धोए जाने की परंपरा कलकत्ता से ही शुरू हुई थी। लेकिन आज कलकत्ता महानगर ही ऐसा है जहां सड़कें धोए जाने की कोई सुविधा नहीं है। कलकत्ता हुगली नदी के तट पर बसा है इसलिए पानी की कोई किल्लत नहीं है।

श्री भूतोड़िया ने बताया कि दक्षिण के शहरों में नगर निगम की गाड़ियां आकर घरों से कूड़ा ले जाती हैं जबकि कलकत्ता में लोग खुली सड़कों पर कूड़ा फेंकते हैं। नगर निगम यहां भी कूड़ा उठाने की कोई व्यवस्था करे। श्री भूतोड़िया ने इस बात पर प्रसन्नता जताई और कहा कि चूंकि हमारे नगर प्रमुख एक मंजे हुए और अनुभवी राजनेता हैं इसलिए उनसे यह उम्मीद तो करनी ही चाहिए कि वे शहर की समस्याओं का राजनीतिकरण नहीं करके उनके निराकरण की ठोस व्यवस्था करें।

जनसत्ता सबरंग, कोलकाता, ३० जुलाई २०००